







श्रीजिनेशायनम॥ श्रीशिवायनम॥ १  
ह्मायनम॥ अथ कौकलावनायावर्तना  
जलि॥ लोह॥

कामनीयविवि  
तिवसेतकरमितवर॥ २॥ वचनिका॥ २

तिनकौमंगलावारन

सारहै॥ यामेकुबुसारनहीहै  
फर

अथ पूजावोडसरो

हुयहेलहे श्री

के मिलन

जानीये। परंतु वह सुषक व मिलै है।  
है मनुष्य को क पढ़ै है। तव वा सुष को  
त है। को क मै अस्त्री न की जाति है।  
। स्त्री त की रुच है। और अने करति  
द है। सो ये वा त जाने विना सुष न ही है।  
पि अने क अस्त्री है। और स व रति  
साम ग्री है। तो ह्य पशु को सो नो ग है।  
प्राग खे पुर य म क हो है। श। दि। पिं। ग।  
वे न छंद ही र चै और गी ता वि न ग्पा न  
क पटे वि न रति करै ते न र पशु समा न  
और ख से च हो त सुं ह र मं द र है ता छे दी

वरण और सौ सरीरा को वरण होय।  
सानेत्रा संपूर्ण और  
तहे।  
के ७७ और रुचै रुच जाके।  
हे जाके।

को मल सरीर होत है।

चाहे। चतुर होय।

चन धारा बोलै।

तिरायै।

जावता होय। मानव होत करे।

लकी सुगंध है।

सुगंध होत है।

मेहोय। और को क कलानही जानतो  
 य। तो रति स मे पुरुष संग्रम मे विजे न ह  
 वै। जति को क कलानही जानतो।  
 दाहा। करम का स डुज धर जनम वर  
 मृत को धाम। विष्म धस्वो पाग्रंथ को  
 क कलान धर नाम। १॥ अमृत चतिका। त  
 प्रथम अस्त्री न की जाति चारि है। सो क  
 है ये क तो पद मनी। २। दुसरी चित्रानी  
 ३। सरी संयनी। ४। चौथी हसतनी। ५। अ  
 न चारो न के जु हे जु हे मे हल छन क  
 त है। ६। अथ पहली। चंय को पु सपु

यवाणीहंसकीसीहोय॥यहप

वञ्च

सदारायैहै॥१॥इतिपममनीसरूप॥३॥

नीसरूप॥चित्रनीअंगहलकोहोय

तछोटीहूमहाहोय

जयकेलाकेसेषम

तलागा

ही॥वीचमैकोमलयपु

उहीतहै॥

कीमुखयैजीसोजाहोय॥



गती कहिये

यती अरु की मुजा दरघ होत है ।  
हल को तैय देह ज चरी होय पाव  
होत नीर वृजा के कमल दीरघ हो  
ती सुत्र छोटे छोटे होत है नेत्र कुं  
गड़े गड़े जाये उत नली चालवा  
अंग जा को सहाता तोर है और  
मन यदात करे बुद्धि को न र्हेन  
तै काम भैया कुत होय के संत  
जन वही करे बार बार भेषि  
वृत्ति होय और वस्त्र औः मा  
दरग सो भीति है यजा की दया

य॥ बुगल.

होय जल थो जे जामे॥  
रनंघर खपर॥ इति ग्रंथ नी॥ अथ हसत नी  
स्वरूप॥

बाल होत है  
को॥ लज्जा करै नह गौर  
चरण पावजा के॥ और ग्रीवा छोटी हो पत  
ईरायै॥ काम जल मै हाथी के मंद की सी  
वास होय॥ मंद मंद गति वा सै सुरत मै पुर

वाणी बोलै नारे होय सै चंचल सी हस्त नी  
होत है शति हल नी स्वरूप॥ शते ग्रीको ककल  
धरंघे अस्त्री जाती वरण नुं तो बकला॥ २

पेचलाक -

सोइ न अस्त्रीन को आपकै समान पुर  
होय ॥ तब संजोग मै आनंद होशि जै  
हलै कहै आयै है ॥ ह्यानंद की समान  
वासतै पुर सत जति कहत है ॥  
चारि जाति के है ॥ येक तो ससा पुर यहै  
दुजे कुरंग है ॥ २ तीसरो दूषम है ॥ ३ चौ  
अश्व है ॥ ४ ॥ अवश्यन के जुदे जुदे स्वरु  
हत है ॥ अपर तत्पर न केन ॥ ससा  
जानिये जा को सातल सुभा व होय ॥  
नवंत होइ ॥ सां तोषा होइ ॥  
होय ॥ दातार होइ ॥ गोरी चंदमा

यहंत अलहोइ

य॥

वचनगवनये अलपजाके॥  
कोमलसुछमहोई॥ सोससापुरसके  
ये॥ २॥ इति सुसापुरस॥ अ॥ ज॥  
न॥ कुरंगपुरसचतुरहोतहा॥  
॥ सिद्धहोइ॥

तचाहै रागुरंगचाहै॥ १५  
रा॥

धुदीरघअंगनहीहोइ॥

ह०

कहिये ॥ इति दुरंगल जन्म ॥ दि० क० प० न०

वृषभपुरसमारीसरीरहोय ॥

कुरसुभावहोइ ॥ अल्पहोय ॥ अर

होय ॥ कामकेलिमेवाववहोत

त्रवडेकडेहोयचितवपलहोय ॥

सदीरघहोय ॥ तननामस

भाजामारी ॥ छातीकगोरजा

थपनकनाहीहोय ॥ नुजामा

तीकगोर ॥ बालकरडेजाकेमं

होय ॥ लोभीहोय ॥ नोअंगलव

जाकेहोय ॥ साक्षयभजानिये ॥

मल्लुन॥३॥अथ अश्वपुर ७

चविचरिकैकहै। चक्रतसौरहै।  
चल। उतावलोचलै।

हसत्रंगुलहोयजाकेसोअश्वपुरषक

तत्राप्य। चलउता।

अथरातेजैहै।

है।  
तहै।

म

ने यह है। अंसात अंगल मध्यम होत है।  
प्राव अंगल होय सो उत्तम है। और व  
अकै नव अंगल लिग कहो हे है। सो  
नो समान है। अरद सहोय तो उत्तम है।  
प्राव होय तो कनिष्ठ है। और अश्वपुर  
अकै वाह अंगल लिग होत है। सो उत्तम है।  
सग्यारह होय सो कनिष्ठ है। सो मुख्य प  
छी पुरषन की लिग सो है। अथ परित  
नीत ही जाति की दुर्गार्हनी है। येक तो हि  
नी। १ दुजीव उवा। ती जीह स्थनी। ३।  
प्रेती न के लछत पहलै वी कहे थे चि  
नी तो हिरनी है। संखनी व उवा है।

रहोय॥

कमलकीसुगंधहोय॥

करानितंवमारीहोय॥ आगुलीसुधी  
होय॥ गजकीसागतिहोयमनचंचल  
रागचहै॥ नगछहअंगुलगंभी॥ रहोय  
सोमगीकहीहै॥ अथबहुवातललना॥ व  
डवानामथोड़ीकोहै॥ सीसजाकोकहूं



कभारै होउ॥ नारी नुजा उदर पत  
 रोस धनो जामै खाल कमल हाथ  
 जाके निपाधणी सुनो जन  
 णी॥ कमरिलं वीचल चितर हो  
 रमै पीतिव होतराये -  
 मांसकी सुगंध आवे सं  
 वारमै छूटै सो वडवा कहिय॥ नो  
 ल॥ नग गंजीर जाकी॥ अच कली  
 नारी नासिका होय कपोल  
 नव डे॥ ग  
 लेने अहे ताके  
 लक होउ नारी हाथा पाहाय

अरु रुखी सब रहोय रति  
होय॥

जनव होत कर॥ पाप मै इच्छार है कामज  
ल मै हाथी के मह की डुर गंध होइ॥ नगवा  
रह अंगुल गंजी रहोय॥ यह हस्त नी है ये

मध्यम

अधम हो जात है॥ शोचि चार लीजिय॥ इ  
ति श्री कोक व

रन न चतुरथ कला॥ अथ सप्त रति वरत  
न॥ रति कहते है जो हिरणी अस्त्री होय॥  
कुरंग पुर सहोय तो समान रति है॥ और  
वज्र वा स्त्री वृष न पुर सहन को॥ समानति

वा०

२

रति है॥ अथ नवरति बडवा तो अ  
और अश्व पुरष इनकी उच्चरति  
धनी नवरति बडवा तो अस्त्री॥  
तहै समान रति होय तो उतम है।  
रंग पुरस होय॥ और हस्त नीलुगा  
दृषना तो नीच रति होत है। ३  
रति अथ अतिऊ  
रणी अस्त्री अश्व पुरष होय  
अरति है। १ और हस्त नीलु  
करंग पुरस होय तो अ  
इति रति॥ और कहते है

है।-

होत है।

यतो॥ वह युजस्तमिदं न ह्य॥  
पैन ह्य॥ सुव न ह्य॥ होय॥  
सो स्त्री भरतार

भीतर सो भगवत् होत को।

सुष

रायदे सो अस्त्री वस्य होय २  
अस्त्री काम जल छूटत है त  
सो करत है रोवेल गजात है  
होय कैनेत्र मूहिलेत है वजो  
क बुनही सह सकत है ॥ १ ॥ अथ  
॥ तहारति को सुषय कह  
तो वहोत बार ताई धीरा धीरार  
वाकुचिर रतिकहत है  
धीरवीनही उतावलीनही  
मसमें है १ तीसरी वहीन  
रतिकरै सघ्न काल है १०

तिकारतिहे  
मिलै॥ तव नो नेह  
अचारै भै रहोत है। १५  
होऊ मिलै तव नो नेह॥ १६  
तव सताई स भै रहोत है। १७  
अधिलीजै ये सताई सर

तहां काया व कुल होइ

इति श्री कौकिल धर ग्रंथ रति

विलासकरे तो वह प्र संन नही होय  
चिवो व्रथा ही है वह अस्त्री वारति  
असे मानत है जैसे रोगी नीम कुं-  
मुदि पीवत है ताते रुचि र पजा  
सै यह कही जात है महीना के दोय  
होत है तथा कुछ पल शुक्ल प  
पक्ष न है मै अस्त्री न के वा मै अं  
देव वसत है कृष्ण पक्ष की पञ्च वा कु  
मे रहै फेर मा सकौ पंग के अगूठ मै  
वै सुकल पक्ष की पञ्च वा कु पंग के  
ग मे रहै पुन कु मांग मै आवै  
त्र मै दे षि ली जै

काल चिर	मध्य		चंड	चिर मध्य	चिर मध्य
चंड	मध्य	मह	मध्य चंड	मध्य मध्य	मध्य मध्य
लघु	मध्य	चिर	शिघ्र चंड	मध्य मध्य	मध्य मध्य

अथ कामदेवसको जंत्र अथ कामदेव  
वासको जंत्र लीयते ॥ त्रिनमः ॥ १ ॥



८ गाल चुवन	१२ गाल चुवन
५ ग्रीवा नषहान	११ ग्रीवा नषहान
६ काय नषहान	१० काय नषहान
७ कुच नषहान	९ चुक मर्हन
८ उदर मर्हन	८ छाती मर्हन
९ नाभि मर्हन	७ नाभ मर्हन
१० नितंब मर्हन	६ नितंब मर्हन
११ भग रति	५ भग रति
१२ औघ मर्हन	४ औघ मर्हन
१३ गुल्फ मर्हन	३ गुल्फ मर्हन
१४ पद मर्हन	२ पद मर्हन

अन और कहत है। यह सब लुगारन की

स्त्रीतिनक

नतिथन मेरति की या सूचत है। या जंत्र मे  
सिधिलिवा है॥ अथ ज्ञान मे दारतिके चार  
पहर है तिन मे सौ जा पहर मे जो लुगार रति  
चाहत है सो कहत है पदमना चौथे पहर  
मे रतिकर जल दी बूटत है

रवित्रनी रातिके

आरखें संवती तजि पहर मे देव है दूसरे  
पहर मे और दिन के मध्याह्न मह स्तनी दे  
वे है १॥ अथ पदमनी की और मे रहते है

लुघुचिर	लघुमध्य	लघुसाध्र	पदमनी
चिरचिर	मध्यमध्य	मध्यसाध्र	रतिके सं
मध्यचिर	चिरमध्य	चिरसाध्र	जोगसौ

करै काम सेव ज बल ही जागे पह मनीव

येयततकालइवैहै॥ चौघकारति॥ पहलै  
सोगलेआलिंगनकरै॥ दोऊकुचवहोतम  
पलै॥ होवकाठै॥ पेटवाह॥ जाघइनवोरनय  
गाँडे॥ हासविरलासकरै॥ त्रैसकामहेवकै  
गाँवै॥ चतुरथाकौपरमनीइवैहै॥ पंचम  
कीविय॥ होवकाठै॥ कुचमसलै॥ दोऊनेत्र  
चूमै॥ वारवारऔरहाहिमेहाथनसोकेस  
हमंदषीचैपरमनीवाकुलहोइछूटै॥ ध  
रितिपंचमनीचंद्रकला॥ अथचित्रनी॥  
॥ वि॥ अष्टै॥ दसमी॥ द्वादसी॥ इनतिथनमै  
वेत्रनीरति॥ चाहतहै॥ छवरति॥ षथम  
गेवचूमै॥ आलिंगनकरै॥ कंठसोलगावै  
नेतंवनमै॥ नखलगौवै॥ वहेतचित्रनीइवै  
॥ अष्टमी॥ कंठनमै॥ गुजागेरिलिपटावै॥  
नानिमै॥ नखदोनदेइ॥ होवकाठै॥ वहेतजा

अपने वायहाथन इनलुग  
कौमलै धीरांधी रंजायकुचकमरीपाठ  
म॥ औरग्रीवाइहांनयदे मर्दनकरै  
वारललाटहुमैसीतावहीइवैहै॥३॥  
गोपीतो लिपटावै पहलैचुवनकरै  
अधरकावै औरकांननमै नितंवनमै  
यदेनेत्रनमैनेत्रमिलायै वाल्मीवीचैत  
नचीत्रनीसीकारीकरैबाकुलहोजाय  
इतिचित्रनीदीर्घा...  
नदीविनि वाहनसौपररंभणगा  
रोवनकावै मिरुईहोयवैभूजानके  
जनमैतीषीनयगाडै

चवहोतमसलै॥तीजकैदिन  
हैवसहोय॥सात॥छा  
गलकपापगहनघोरनमर्दनकरै

र॥भगकुंगढीमसलै॥सितावहासंघ  
इवै॥अपारसि॥पहल  
गढातरहसौ॥

रिवोरसौनयनसौविदारनकरै  
गकरै॥

तयनसौनाजिमेचिहनकरैकु

सौसीकारीकरै॥अंगसौ  
नीरवैवसहोय॥ध॥यतिसेवनीवंड  
अथल॥तनीवंडतलो॥  
परिमर्दनकरै॥नामिनीचैमर्दनकरै

देन घन की मार दे भग मै लिंग सौ के  
हस्त नीद वैवसि होय २ भ्रांति नांतिक  
लिंग न चुवन करै वहोत तीये न घन  
कुच मंडल विहार करै करुण न करै  
और भग को मर्दन करै  
स्वा कौत न रति नाहि सह सकै है पूरन  
वासी को और स्माव स कौहस्त नाव  
यहो वादिति श्री कौत नाव क लाय रं गे क  
ता ते नंद चंद क लाय रं गे क  
कला धा अरथ अस्त्री न की अरथ न द  
ना १ कन्या २ गेरी ३ बाला ४ तरुणी ५  
दा ५ वृद्धा ६ ये छह अवस्था होत है

रवारहवरसतार्गौरीहै॥२॥

क

४	२	१	५	पद्मनी
८	१२	१०	६	चित्रनी
११	७	३	१३	शिखिनी
३०	१५	१४	५	हस्तनी

र

वातहै

वाहै

हैवृद्धाकामकला

हैसोतोअंधेराभैरतिकी

तरुनागहरेउजारेभरतिकीपासुराजी

तौलौआअंधेराउजाल

हैऔरवृद्धासौरतिकरैतौकालरु

हा॥सूकोफलवूढीत्रियाकंनार



एगानसौ प्रसन होय ॥ और  
सुराजी होय ॥ वद्धा जाय वज्र के वचन  
जी होय ॥ इति अन्वयार्थः ॥ और  
जोलुगार्दुवरे सरीर का होय ॥ और जो  
गार्द लांवी घणी होय ॥ जाकी कांष औड  
य ॥ और जो काला होय ॥ सो वहोत वार  
तैहै ॥ फेरि वाको असि थल हो जात है ॥  
र जो लुगार्द नारी घणी होय  
य ॥ छोटे अंग होय ऊंची कांष होय ॥  
लरी ही बूतैहै ॥ फेरत पार होय रतिकौ  
जाय धा ॥ इति रत्निलतना ॥ अथ एक ति व  
नं ये कतोक फ एक ति की है सोउ

दुजीपितक यकृति कहि॥ सो  
यकृति है॥ सो अंधम बोटी है॥ क

दांत होय॥ और नेत्र नषा दो  
कण होय मानव होत करे॥ भरतार में  
गाढी होय॥ स्याम्य होय॥  
रकोमल गुरुगुदी भग होय॥ कफ  
वारी अस्त्री त्रैसी होत है॥

कुचति नितं वजार होय॥ अ और  
पजन मै पसीता की वास होय॥  
होय॥ टीली और ताती भग होय॥  
चरतर होय॥ अंग कोमल होय॥ अ  
यकृति॥ अयता के लक्षण॥

गहोय। सुरतमै कबिन होय। भगवर  
होय। इति प्रकृति विचार। अथ देस सुन  
वकी अस्त्रीता केल छन। मुष प्रसन रहै  
परीरमै कवल की सुगंध होय। संतोष हो  
न पवीत्र रहै। सब काममै चतुर होय।  
गोले। और वो होत धन। और वहोत  
निय होय जके सो देव सता कह्यो है।  
गंधर्व राजा। गान विद्यामै चतुर रति  
पुर सरीर सो जावान होय। सुगंध पूलन  
मै प्रीति होय। रति द्यो ज चाहै जहाणी सु  
त्रा लाजन ही जाके। सारु मं सचा है। मोरे  
भारे कुच होय। चंदा को फूल। असौ गोरी

होय॥ रोसवहोत॥ वारवार मै नोग चोहै  
को जस एणी कहियो॥ ३॥ मनम सुनाव॥ १॥  
हानवोहै॥

व्रतन मै येहन ही मानै सो मनष जा  
पिसाची पोटा चलण की होय  
ही नो जन करै॥

॥ सपणी सुवाव॥  
ली मन मै होय॥ न्नाति राखै वारवार उ॥

दाका गली सुजावे  
तुहा  
नूषवहोत लगे सो का

कू

हिकरै॥ चाहै जहा वैपै॥

दही कहिये॥ ये अस्त्रीन क

ही मुषल गाइन की एक ति होय है॥

जाऐ ता को चतुर कहिये॥ १५॥ इति

मुक्ता नव रत्न॥ अथ अस्त्री॥ ३६॥

के कारण मरि जाय॥ जो सदा

धर रहै॥ छिदां लिलुगाइन की

पति जा को दिखे सभै वहै तरहै॥

होय॥ इरधारायै॥ और वहो

है॥ पुरस वेष्टे होय॥ आप

चाहै जहं जाइ॥ और असेही

जाणीये॥ अथ अरु

सहोय॥ कगोरहोय  
वेतोवापुरसते अस्त्री उदासहो जाय  
सो

धविरकालछ  
नही॥ वोलेउतरनहीदे  
जायतवयसन्तरहे॥ सजोगमैरु

छिडोरै॥

नजारो॥ खेलनेकीचाकरै॥ त  
जेपानपीतितजीहै॥ अथपीतिवरने  
सोवहपीतिघार

गुण और गुण को द्विविचार नही फे  
जी पड जात है तैसे मन बंधि जाय सदा  
से पुरवलो संसकार है दूसरी समाधी  
हो उन के कुल स मान होय धन स  
न होय गुण अथवा रूप तव दोउ अ  
त्रिपुर सनै मत मिलै सो समा  
है २ इति विनय मय प्रणति  
चाहती वस्तु है अछा माला चंदन  
नहन दव वाहन मै पीति कर ले  
यजा पीति कहिये अन्धास का पीति  
को ही सि कर मै देख मिलै

ताहो अन्धासकरतेकर

प्र

॥ अथ अस्तीनका श्री

॥ योग्य होत है ॥ निहचो छहग

म

माहिवीचमैकेसरोहोय

काहुकीभगगोलीसीहोतहै

हकीभग

नरी ॥ औरकाहुकीपरदरीहीतहै



गैहै॥ वारवार तव वह वीर जछो डैहै॥ औ  
र भगवै उपरि नासिका के आकर है॥ वा  
सो काम देव को चित्र कहत है॥  
रघु वायो यह लै लिंग कौ मलै॥ और क  
हुत है कह जो यथ म कह लिंग के समान  
सो वह ना जान जाक आवै॥ चंद्रमा को सु  
र होय॥ अस्त्री को वास मेरति करै॥  
वेग हा छूटत है॥ अति दोषि है॥ अग्र  
त है जो तमै॥ और मा  
र रही होय॥ और काहीत रहै सो हा  
होय॥ वहीत विरह चंती होय॥

जुरहो या कांतिमान असन्त होया

थनका अंगली चटकावे

॥ नमूल दये और आदर सोहसे ॥

वैतवजा॥ कारातेकी चाह है॥ इति  
श्रीकौकिलधरनेये श्रीरत्नकेतुशुभ  
वर्तव्यरत्नसंपत्तिकावलि॥ १॥ अथ अस्त्री  
तकेदेस वृत्तान्त इत्यंति॥ मध्यमदसय  
धामांतिवस्त्राभूषनलायरावै॥ प  
त्ररहै॥ पवित्रतामैचतरहोय॥ सुंदरसु  
लहोय॥ कामदेवको  
केआनदमैरंगरहै॥ कपोलवेंडन  
रनषदनयेनहीचाहै॥ असीमधदेस  
कीपेदाज्जर्लुगार्होतहै॥ २॥ आत्मीर  
सयथा॥ उपनोगकीकलानमैयीतिहो

रघातन सौराजी होय  
कोने देहे ॥ आगे कहेंगे ॥ अ  
होते है ॥ २ ॥ न. ॥

की सब वारें तैद्यातन सौराजी होय  
न

यसन्त होय ॥ ३ ॥ आगे की ॥ अथला  
देव की ॥ लिपट वासो

मल देही होय  
रथ करण टक देस यथा ॥ कोमल

लावाव होत जा कै रति मे

वेगव्र । तीनचंड १ मध्य २ मंद ३  
चंडवेगनकी वातन सौवी वहोत वार  
जेइ वै रति को जो कामता मै चतुर हो  
य ॥ अै सी को सल दे सकी अस्त्रा होत है  
६ ॥ अय पाटल है ॥ महराट है सवय ॥  
मंद मंद हसवो सा सती सदा ही  
और भौहन सौ नटे निरल ज होय  
होय वेलन को मै चतुर होय ॥ वाति वहोत  
राये ॥ अने कने पर चै विनो हमै रसीली  
होत है महाराय की उँप जी  
उवंगाला देश की फूल सौ को मल सरी

तिथोरी राखै  
है॥ घंचलनेत्र हों यगौ डबंगा  
सी होत है॥ पाउत्कल हेश की  
ति की अभिलाषार है

महेश सौं व्याकुल रहै  
एक वरु देस की॥

विलास चतुर प्रीति व होतराखै  
वासनी॥ आपके  
कहवा मै प्रीति जिन की  
न वासनी होत हो॥ ११ ॥ राज रात की  
भोग मै प्रीति जिन की॥ नेत्र सुंदर  
रति सों प्रीति अछो नैषधारे॥

नती नोदे सन मै होत है १२ मीरु  
तिजांति के उपमो गन कोर  
कोरंगता मै चतुर फूले कवल से  
तम सौ प्यार वहोत है कर्म  
तव गठ करे को मल गति होय  
लंग की प्रीति संगम करवा  
नरतार को दिय ता मै चतुर हो  
वान होय उपमो ग सौ प्रीति  
चंड वेग होय महर सरूप हो  
पावती नगरी मै तै लंग दे

वसिहोतहै  
होता॥ लाज थोड़ी नयन हूँ ॥  
नौदेसनकी

गजोयेनवो

देसकी॥

कास्मीरकी सो कहतहै  
धहोया॥ थोरही संभोग सों  
और खुंजन आलिंगन ये  
ऐसी

१८ अव कहतहै या मोति अ



व

तव अ

कैहोय पूर्वकसौजासुषकौ

धरग्रंथे अ

कैहोय सुभाव कथननो अष्टम

अष्टम अष्टम नदी

हत है जो पुरखतें पहलै अ

हे तो नोगको फल जो सु

महजानके कामी पुरस अस्त्री

दायजतन करे १ महलै

जाति सुभावर के

मेर यत्र स्त्रीनकी चंद्रकलाति

हरलो हस्त्री डवै है नहा

हे। सो कहत है। अस्त्रीन की जाति।  
सुनावन हा समजे वै मै। आवे है जा  
क मिलायतै। जैसे कोई-  
है। और बाह कोई अंग धिन्नी  
न को है ऐसे ही  
र ऐसे ही सत्व सुनाव मील है। देव मन  
ध्यायि साच।  
रंग ये लब न मील रहै है।

स्त्रीतिन के मुख के लिये व होत क औ  
षदतिन की विधि सौ अस्त्रीन को इवा  
पवे का विधि सौ अस्त्रीन को इवायवे  
का विधि लिख है। सहत किं  
राती नौ औषद पासि न गनीत रत्न गा  
वै। फेर कामी नोग करै तो अस्त्री

गके भीतर आर पाछे वाला  
तुलाई पहली रुट क पूर टंक  
यती गुन्ना वरमिला अवर वर  
नामिना गालि गैल गान  
रतो लगान जलवा छुट  
नामिना गैल गैल गान  
नेक र कानि कुरा भिना मा  
पुनकन पुर गता है अर  
पुरा गान अरुना कान  
गान गान अवर वर ल  
गान गान अरुना कान  
गान गान अरुना कान

रो॥ वल्लोतक य स ध ह लु गा र्वे  
जल शिष्टे द्वा त्र य थं न

जूलू का ज उ ग उ को ह ध

वै वी ज गि रै न ही

कौ चूर ण

ता जाल दानु ही छू टे य

रो॥ सह त मे पी सि ना नि मे ले प करे  
न हो य उ सु वा पा रो व रा व र क  
स ह त

मुष १ नहया सुद  
काजउल्लेपुष्याकमें कंन्याके  
तकोडोराकरे बाजिरामैजउ  
मरि केवाधैधंननहोय ३ सपे  
केबीजवउकेहूधंमैपासे  
बीजा चंरनइनसायतो  
था नर्जवृद्ध औ नर्जाजे  
वलननहाहोयतो येकहेसो  
समजूवेहोतहै तातेनार्जवध  
औषदकहतहै विदारीक  
ताहिकेरसमैनिजोबै सूरज  
मैसुधावै सहतघृतसोपाय

है। इस अस्त्रीजोगे॥ १॥ आव  
हिके रस में निजो वैद्यत  
त्रिक सैं सहत सो चाटो॥ वृद्ध हत रु  
नार्त्तिने  
इत को चूरण हृथ में

वैद्यत मिश्र मिलाय फकावे॥  
होय॥ सो लुगार्त्तिनो मै सु  
जा॥ लुगल सो नु कर्षमा  
रात्रिकै सैं दृष्ट होय॥ २॥  
मानले॥ इस गुणो  
पुष होय

पतलो लिंग होय तो अस्त्री  
या ताते अस्त्री की यस

यः११ ससीला कूट घोषट  
कणवृण तिलतैलश्नकोलेपकरे  
वैटै सेंधोलुणमिरचकूट कटेरीयर  
जरीअसगंधजवमाया पापल स्वत  
गरसोतिलको तेलमैपासि सहतमैउ  
वत्नोकरे करणपालीकैलगावैलिंग  
उधमिलना कूटलवणकवलकी  
"षंजी" श्नको जलावे सोनस्मलेक  
रीके फूलतिनकोर सलै नैसको गो  
रश्नको धसिलिंगलेपकरे ताही  
ण मुसला कारदटहोय लोश्के  
तागवला तिलके तेलमैधर

लिगवटैया

चनधौदात्रस्त्रीहोया॥

संकोचनकोजतन॥

नहोय॥ शहरदासेनूदेवद्वारक  
केसरो॥ नगवै

तहोद्वारक

लगावै॥ न

गहोय॥ अत्रिफला आवलाके  
एकीछालि॥ समानलेसह

लेपकरैवृषीव

धक



फूलसरसोंको तेल थोड़ा अगन  
तात्ते करे सुगंध होय १ देवद्वारति  
से दाहिम अंजन का चन तेल में  
लोते लमसले नग में सु ।  
लोगलासन कडवा तेल में सिंहूर  
सात दिन घाम में धरे क ताको  
करे नग के बाल जाते रहें १ सं  
केला को जल हरतल से कत्रक  
वे घोलि के बाल जाय २ हर  
सस्म केला को जल लेप करे रों  
गनी १ प २ वि जोति धृती के

पुष्पजलमैपीसपीवैअस्त्रागयोयुष्प-

१

हरडाश

समान। सहतसौचाटेदिन। ७।

। सांतिहोय। पुनरुये

इनकीनस्मसहत

अंतमै।

गकेसरीकोचूरण

पावेहित। ३। हृथनदूणकरे।

कोसंजीगकरे।

वेरुयणकटेरी। पापलीके

चूरणगायकेघृतमैपावे

पूरकैतल हूयमेपव्याप्युत  
यत्नानामेव ३ गनेधारे  
कलातिकैहयैकैलमीमां  
सहजछेलाकाह्यतपीवेम  
इ ३ वधीसावरआवृत्ताइत  
यस्तमवहिन ३ गनधंनज  
तल्लयतावै ३ लानकवल  
हूयधुलसहसणकायसीए  
यहिन ३ अस्त्रीतीइतरेत  
गनेआववेतिश्रुतशोफा  
रवह तशेमजातह यामिसं  
जपमयप्रसववधित्तजो

यांकोचूरणं सहतद्यतमैमि  
तानिसुषसौहोयजलसीहोयश्चातवार

धिकअस्त्रीके मरिकैवांधै॥ अथवासि  
रमैसंतानसुषसौहोयश्चा  
मथवाहिवालस्यो  
हा॥

णीकौय्यावैवकाजलसीहोयसुषसौ  
होय॥ अथवाजकररुगुगुराणाति  
वरस्योपलमात्रनितरिना॥ १५॥ यायजव  
ताईजावैतवतर्गर्भनरहै॥ अगनि  
वृक्षताकौकाथमापुष्पकाअंतमैदिन  
तानपीवैवांरुहोय॥ २॥ कंदवफलदिन  
३॥ पीवैतातेजलसौवाजहो॥ ३॥ तातेव  
हेजाभूरुहकाबीजपईसाभरतकाभर

[illegible]

ल०

लेपकरै॥ बाल स्यात्स्नेय सुपेदसौ ७॥  
धने शसुपेदकरै  
सुही के दुध सौ मै पासे तिन को बालन के  
लेपकरै। सुपेद स्नेय शव जी को दुध त  
मै आवला पासे तिन को लेप करि पाछे  
हागेरे। बाल आयते आपजाते रहै॥ २॥  
मुष कंटक हरै॥ वच साध रघु रियां रन  
को लेप करै। मुष पै जो वन तै उ पजी। मुष  
पै गुम जाय दिन ३। मै अत्रा पुरसन क  
लोद सौ धन सिर सों रन को लेप करै  
मुष पै कील जाय २॥ अत्रा नो लहरा  
तेल तिल सिर सौ दुध मै धी मै दिन ७  
गाया जाय चाद सौ मुष होय १ गेरु सौ  
पेया चोला रज जहर हरै २ जल मै

अतः प्रत्येक पत्र  
होय को काठे कर दो तन कु वत पत्र  
अ कु वर र मेटे हो प्रोतन नो तन गा  
नो प्रोतन आक को र प्रवना समन तः  
अतः प्रोतन म इत को काठि मेशः  
अतः प्रोतन कु वत पत्र गाव कु व माय  
अतः प्रोतन म नाना कु वत पत्र गाव  
अतः प्रोतन म नाना कु वत पत्र गाव  
अतः प्रोतन म नाना कु वत पत्र गाव

सांख्य अतः को

अतः प्रोतन म नाना कु वत पत्र गाव

सै॥ तसं प्रथमतिलकलियेहै॥ तिनतिल  
कनकौदेषिअस्त्रीवस्यहोया॥ तिलकवि

कौपीसैआपकेबीजमै॥ ताकौतिलकक  
रै॥ तातिलककौदषतहैतीनुलोकवसिहै  
व॥ वाल्यापनामुनिनैयहजोगकद्योहैव  
होतउत्तमहै॥ सुपेदआककीजउमजीव  
वचमोथाकूटअस्त्रीकीजगकोरुधिरर  
जस्वलाइनकोलेपयेकअकरितिलकल  
नाटमैलगावै॥ जोदेवैजोवस्यहोया॥ रतमर  
पीपलमूलमाटासीगीपापलिय॥ आयहि  
वरावरलै॥ आपअंगकोमलसवसहत  
मैमिलायमंगलवार॥ कौतिलककैराव  
पेकरलहोया॥ पुरसकौवसिकरणगोरो  
गनलेअस्त्रीआपकोपुष्पकोरुधिरता



॥१॥ ॐ कामानमाह स्व  
क्रीमेव स्पंकुरु स्वाहा अघोतर  
जपेन सिद्धि अथ लेप जो कामी पुर  
नेके अंत मैवाये हाथ मेले अस्त्री  
वायाव कातल वाके ले पे सो अस्त्री  
होय अति के अंत मै पुर सकोलिं  
जीवये पाह सो सपर सकरे जवल  
ने लवल ग अस्त्री दासी रहै २ कपो  
दा सधव मधुक ल मान ले पी सके  
लिये पाछे नोग करै अस्त्री वसिहो  
क पूर सना लू सहत मै पी सिलिंग  
करै पाछे नोग करै अस्त्री वस्य होय

अथ धूप॥ चंदन मंगायै कथा॥ ३५  
अथ वृत्तये मिलाये। इनकी धूप देह कौ  
थावस्तार नमै मुष कौ धूप देता पुरस  
कौ अथवा अस्त्री कौ देवि कै मोहता  
पराजा प्रजाप सुपंछी देखव मात्र सौ  
वस होय॥ मंत्र उँ विल्लुवे परमात्म  
मः सर्वजन मोह तं कुरु॥ स्वाहा॥ अ  
त्र रातं जपेत् सिद्धिः १००॥ यह दत्तात्रे  
तंत्र मंत्र है॥ अथ कौमुदी मंत्र उँ का  
वारी अमुकी मेव ये सताथानयत्कीय  
काम देव मंत्र या सौ कुरु म कौ फूल  
धवायत्ता स कौ पुष्प मंत्र दे अस्त्री व  
हेय १५ पहलै दे सहजार मंत्र जप ॥ ह  
र आर्जति दे तव मंत्र सिद्धि होय॥ चामु  
नना उँ चामुज अमुकी मोहव व सता

३ . ॥ अथ च नानाविधसिद्धि  
मस्वरामोहयस्वहा यामंत्रनाग  
मैलियैदीतवारकोसोवारमंत्रदे  
नीवस्वहोय २ ॥ अथ च नानाविधसि  
द्धि ॥ लल्लुखिहंगम २ कामदेव  
नमस्वाहा यामंत्रसौजायफलक  
उउवारसमैनिजोवैकुण्ठिकैधा  
सौ ३ ॥ उमौघस्थिवावै अस्त्रीवसि  
अथ संस्वनीवसीकरण उतमो  
उ २ यहमंत्रसिद्धहै यामंत्रसौत  
फल श्रीफलदेसंयनीवस्वहोय ॥  
उ ३ नीवसिद्धि ॥ उ ३ कामदे

वायस्वाहा कपोतकीपांषपासीसहस्रमे  
ताहि॥ यामंत्रसौमंत्रहस्त  
य मुनीस्वरनेनेयहवडेउतममंत्रकियो  
है॥ १०॥ इति श्रीकोककलाधरग्रंथे वसि  
करणतंत्रमंत्रवरणनंनामदसमो कल  
१०॥ अघ अंगरागजरणनं॥ अस्त्राके अं  
गनमेवास्योटीहोय। तो पुरसयसनन  
हीहोय। सुयनहातातेकामीकीअसन्न  
ताकेवास्तै। अंगरागकहतहो। चंदन  
सुपेदयसमोथा। लोद। आमकीछा। लि  
येकत्रकरिपीसलेपकरे। सरारकी। दुर्  
गध। शहरडे। नीवू। फलोदा। हाडो। सपूप  
त्रहोनुकोवकल। पासिलेपकरे। दुर्ग  
धजाय। अकिं हरीकरे। जावे। बीज। हरडे  
वालक। जिड।

पकरै पसिनाकी डुरगंध जाय ॥  
आपानको जल कवल लोद अना  
कल गरमी मै सरकै ले पकरै प  
नहा होय धीर सिरसका फूल के स  
द सरार को ले पकरै पसानान  
य आवे गरम लगै नही ॥ अथ  
ते संतप्य होय लपत्र अगर आस  
का फूल के लकी का फूल ये ओषध  
करै तावज मै धरै पाछे फूल का  
गारे तेल लगावे सुगंध के सन मै अं  
इय वस मोथान यमा सीक पूर पत्र  
पापी अस्त्री सिरको चालन मै लगा

वैष्णवे

यः

रे। सुगंधयारी है।

लोह

पकरे। सुगंध सरीर में बहोत होया।

वैतम सुगंध

लाजित॥ चंदन क

समेरा कत्र करि ले पलगाये। सरीर में

जा जाग्यो ते है।

वीगुणी

का सुगंध का सरीर कफूर २०

करै। तां वूल मै धरा मुष मै रावै सुं  
प१ के सर को थोणे पच मेल पुष  
गोली कर मुष मै धरै सुगंध होय  
को के सरो कूट क पूरण मै ध  
मै रावै सुगंध होय २ कां वो ज्व  
वूल मै पात स मै नित वाय मुष मै  
होय ५ सों वा मुं जी व्रह्मी वचपी  
वरावर ले दिन ७ पावै सहत सौ  
रंग द जाय सुगंध होय तज प  
गोली पान इला इची दागर पान  
मुष मै चावै सुगंध होय ६

रवै जात ली ३ ४ ५ ६ मां वाते

लसे विसरं कं डे न की ॥ आंच सो ते करै यो  
निमै लगवै घास जाव ॥ १ ॥ कां घन की वा  
स ॥ तूत की छां लि अ नार की छाल र ना

क पूर टं का ॥ १ ॥ ये क लै लाल चंदन टं का थ  
न र्द चि रे जी ट का ॥ १ ॥ स व ये क घा पी सि च  
र न करै ॥ तेल मै जा सि उ व ट नो ॥ कर नि म  
र ल रूप होय ॥ क व ल सो मु ष हो ॥ १ ॥ ज  
व कौ चूर न ह ल री गो मूत्र घृत सर सों ये  
क व क रि म र्दन करै ॥ मु ष हा थ पा व को म



गवर्णनंता एतादृशकला ॥ १ ॥  
वेवाहलेर्उपदेसकामदेवकीक  
नामैजोगहोय सोकंन्यायथमदे  
विवाहिये सोसास्त्रकीविधितै  
ममलोगनकहैहै आपणीसमा  
कुलहोय धनधान्यसमानहोय  
घरकीवेटीहोय जिनकोना  
ब्यातहोय विद्यावानहोय पराक्र  
जवानहोय स्ववानघरहोय ॥  
घरमेचलतैहोय ताघरकीर  
आरकहतहै जाकेभाईहोय  
आपनेमरिमेछोटीहोय आपके

रिषगोतनही मिलै॥ अैसी होयताहि।  
बाहिये॥ या लोक परलोक मै सुख होत  
है॥ अैसी अस्त्रासौ दुषनही होत है॥ ओ  
र कहत है॥ अैसी कुल की होय। सरीर  
के बिह नषोटे होय तो हून बाहिये बि  
हन कहत है॥ अैसी अस्त्रासौ दुषनही होत है॥ अथम  
निरलज होय॥ स्त्रवा जैसन मुख वै वै। घ  
र मै रहै नही पुरसन सौ चाहै जा सौ।  
वतला वै सो छिदा लि होय॥ और स्त्रुर  
सुनाव होय॥ बोल कइ बो बोलै रोसल  
होत होय॥ बोलताम सजामै होय॥ ये अ  
स्त्री न मै अपहृष्ट न है॥ वह काहू क अछ  
न गै नही॥ बातै नरतार वी दुषा होय॥ रज  
केनेत्र पीलारंग होय सो काहू कूपारी ल  
गै नही लाग छिदा लि होय रंज होय उपी

चही कहोत ही होय ॥ और काल  
ही होय ॥ और सुवर कहोत ही हो  
के कोई बजो रोग होय ॥ ये अस्त्री  
ये नही ॥ इन सों जीतिवान करिये  
कछु सो मानही है ॥ जाके होठ ल  
सो अस्त्री वाहिये नही ॥ और अ  
प्राभारी होय ॥ उचो होय ॥ सो ॥ अ  
दलदली होय ॥ धाव होत नो जन  
वोरही होय ॥ सात घर न मे जायत  
होय ॥ निक्की और सदा सो कसा  
रहै ॥ और उंचा सुर सों बोलेये ल  
न लगान न मे होय ॥ सो काम की

नही होय जो दस पुत्र यौ न जनौ। तो हूँ सा  
ग चालाय कहै। इन तैं पुरस कों सुय नही  
रोत है। और जा के होठ काले होय। दांत  
काले होय। तथा दू वजे होय। लंबे सो अ  
स्त्री रंज होय। तथा दल रूणी हीय। और  
र अस्त्री कुचाल होय सो अछी नही। और  
जा के कुच येक छोटी येक बड़ी और सै  
होय सो लुगाई सो जानही पावै है। जो के  
कुच न पैवाल होय सो रंज होय। कुच  
तिल अछी नही। और छोटी होय तो  
बुरा लजली होय। जा के कान छो। जौ  
य सो दर रूणी होय। जो राजा के जाय  
तो हूँ और जा के हाथ रुखे होय। हूँ  
चीकणी नर मन होय।  
गहरे ली होय। सो अछी नही कले।

वैद्यवा काली जीव होय । सारा  
साणी जाणिये । वातै सुष नही पा  
रजा की वो जपै मुछ की जगा वा  
य । अगट शयै वह अस्त्री पोटी  
। वाकै मरतार को सुष नही जाकै  
महोत आँवे । सदा र्वध वो करै सोध  
झरहै । तहा स्लइ करै जाके चल  
ती कं पै । पावधै तहां सब दहोय  
छीनही छिदा लहोय । हसवामै वो  
गेगर हफूले सो अछी नही । वाको  
पलायमान रहै औरवहोत चंच  
य । सो छिं संलहोय है और कहत है ।

केपगको अंगुलीछोहोय॥पासकी अं  
नीवड़ीहोय।सोपतिकोमछनकरै।थो  
गहिनमै अथवा अनामीकाचटली  
गलीकेपासुकीसोवड़ीहोय।विचली  
नाकोपतिविवाहपाछेहोतीनवरस  
॥पाछेरंहोय।औरजाकेपावकीछो  
अंगलीचलतमैधरताहोनलगेउ  
हैताकेनरतारनजावैदुसरोऔर  
करैताकरैहै।ताकेपासिका अं  
अनामिकासोछोटीहोय।चटली  
कलेसरांषे।औरसोहाउंचरहै  
तधरतामैनलमै।सोहोपुरसमारै  
रोकोधरवसावै।औरकहतहै।प  
अंगुठापासकी अंगुली अंगुठासो  
है।सोहोदारीपारकरै।जेवनमै

चारणी होय और कहत है जा  
ह जुड़ी होय अथ वार्कड़ी वाल  
मो अस्त्री दोटी मुनषकी होत है  
आपणे ने दृष्टि नही और जा  
नत पै षडे पडे ह सते बोलतै ता  
ता जी पितानही और जा के अंग  
होय सो चाहिये नहीं और जा  
पंडरी न पै वाल होय अथ चारु  
वाल होय सो बिना चारणी हो  
सत मै पगाने नली चके सो अ  
छी नही और कहत है जा स्त्री  
नि अंश दो रवतय लिलारु

कमरिसोइनतीननकौमारे। सरदे  
पतिकोइनकौलिलात्थारघहोयते  
सरमारे। उदरहारघहोय। तोदेवरके  
रे॥ कमराहारघहोयतोपतिकौमा  
॥ जाकीनामीओइनहोयसोसरा  
पधारहा। दलदसंजाकेनौरीहोय। सो  
सरपणीहोय। सोरजहोय। जाकीका  
गलासीजांघहोय। वराहकासारेमहे  
यताकोपतिउससरा। नोगे॥ औरजाके  
अंगमैछुंछंदरीवासहोयअंतकीअ  
थवानामकी। ताहियाहियेनही। वाके  
वरतारनजावे। दुधकीगंधगोमूत्रकी  
सुधिरकायेवाअछीनहा। औरजाअ  
स्त्रीकीनगकाछवाकीपाहले। आत  
होय। उदरकीकलाहोय। रे। स्थोली



और करार होय विलखल पण पुनः  
वीना कहल ऊचै वाहाल देन कै हो  
अछा मही जाकी मग को सिर सुन  
रहे सारन कहल होय और जाकी  
गसाहिणी वार मंडी होय तो पुनः  
य मल्ल और वही मल्ल वारे वारे  
उछा होय तो मंगल होय तो वज्र के  
गके मंगल होय तो मंगल होय  
अस्सक मंगल होय तो मंगल होय  
को मंगल होय वही मंगल होय तो  
मंगल होय तो मंगल होय तो मंगल होय  
हृषिकेश वही मंगल होय तो मंगल होय

को फूल त्रै सो करण देही कौरंग होय॥  
क्रांति होइ सो अस्त्र उतम है जाके के  
स सिर के स्याम होय। वानील होय  
मासे मुख होय। भृग के सेने त्र होय। तिल  
को फूल त्रै सीना सिका होय॥ हस्तन की  
पंगति अछि होय। और श्रोणी नीत वस्त्र  
छे होय। कोयल की कंठ होय सो शुन है  
जाके पावतल वाला ल होय। तिन मे च  
क्र को चिह्न होय। अथ वा कवल धर

राण होय। जाके पाव मैरेया होय। तर्जन  
कै नीचे। सो पतिव्रता होय  
पलरा होय। भोजन थोड़ी करे दांत छो  
टे होय। जांघ के लाकीरी होय थोड़ी सो

मय धनवान होय गुणी होय विष्णु  
म होय सुंदर सरूप होय अवस्थ  
न होय १ और बडे कुल को होय  
पण घर म मे रहै मीठी वाणी जाका  
र होय दया होय लोक डरे कुत्से  
थिर बुद्ध होय पापान होय बल  
होय ताकै कं न्या दे दृष्टि जे दुष्मण  
होय सो दोषे सन होय स्वान ही ज  
गेगी बडे पाप ही ज जे वध अछे कुल  
जोय अति ही लोनी होय अति दूर  
होय कपन होय चंचल होय बु  
ग की जाकै सदा परहे सरहे वेकी

इच्छा रहे। नीधारी लिये।  
जुं बवहात बोलै। ये बोटे लछन है।  
कोक कलाहर पृथ्वि अस्त्री हू  
नना मुहुद समीक। १२॥ अथ और  
अस्त्री सुभोग लोकरना कौ हो सकत है।  
पथ मअरवल चडै और  
ससार मेहां सी होय।  
होय। नीचा हो जात है। गति मुकति नही  
य लोक पर लोक देखे लोक न भेदु यह है।  
भावात् नही। परं न कारण वास ते परार्थ  
स्त्री सुभोग करिये दोष नही। यह बडे  
लोग न कौ मत है। सो कारण कहत है। पर  
अस्त्री गमन जैसे वियोग सिंगार भेद स  
दस लुगाइन को होत है। पति के वियोग  
मै सो वै काम देव के जोर से होत है। तिन

नजि सायाही नाति अस्त्रनिमालता  
मको मरण होय ताते पर अस्त्री न  
न करिये पाप नहा जा गोत मै कथा  
रुखार जा अस्त्री के सो कतै देह  
॥ और हूं अनेक सो अस्त्री की वि  
मरे ताकी गति नही पाते पर अ  
म मन बसतै जो आप के समीप अ  
म होय तो अथवा अस्त्री उवती ज्वा  
ये पुरस को चाहि और पुरस नमि  
को देखतै तै और अस्त्री की र  
छा करिके आवे आपकी पुती  
सौरति दारिये सो सहायता नही

हो सनत ही है।

है और भाँति पर अस्त्री गमन करे।

गिराये है।

धुनाय जनिता ही पापरा न्यून

जलाये है। तार्

भावति पर अस्त्री वचन

पति पर अस्त्री गमन को मनहू

पाय है।

कवारी के भाँति रागि।

जवधूमनवता पापणी औरजकि  
गलाहोय सोसदात्यागीहै ॥ परना  
सिद्धरजवता जोपुरसपरनारीव  
रनवाहै सोमथमउतमवस्त्रराधै  
गहणा आभूषनराधै अंगमै सुगं  
गाधै बाल सुंदर सुगंध जिनमै अ  
रवउपातके वाज सोभुषलात्तर  
शरसव अंगउजलैरहे चतारई  
गतकहै यानांतिहै तो कामनीस  
मिधातिहोय अथउपावजो अर  
सतैजाय आपउततैसन्मुखआ  
कछूक अस्त्रीकेनैनमैनेत्रमीर

स्त्रीनिकदेषतवत्रापवृष्टुराजाय  
सैयकहोवारकरे फेरिनैनक  
जापैकबूकहैतही  
जानिये यह प्रीतिकरैग  
प्रीतिकरिये नरुहती अवकहैतहै  
जाकौजैसमंत्राजलरचहिये

होय

ल॥ दासी धोवभावरगारि  
हैसेरा पटवनि बालक परीमनि  
थवाजीनवनययैसकरे  
पदेसकरे  
होउनके प्रीतिकरायदे यातैहैति



परवाण और जाको मर  
य। थूल होय कठोर वाकतौ बूढो  
असेने की अस्त्री होय चंचल  
ऊ होय मातनी होय  
सतरी थोड़ा ही जतन सों मिले अ  
नुराग वर्णन नेत्र निरलजक  
हसत कुच न भिये दिखावे  
हीषावे छिन मैठ किलेय  
के अंगूठा सों धरती बोहै  
की सी धर हजाय चरन के  
सुधा विछि पारै देहा तोड़े हा  
मैने न मीलावे और सरस को दि

मंदहसताज्जर्वातकरै॥

चाहतहै

धैरति की बात छे पूछया कहै

नब कौ आपके हाथ पकड़े मसले

जुं चने आंगली चटकावे जा

धी कौ बाध मै नरे और पुरस्के

ताके घर जाय मित्र कौ देखिते मुख पे प  
साना आवै उज्ज्वल कि जा कौ देखि देखि मु

अनुरागवत कहै

कौ हृती ने जी काम कलाने मै चतुर हो

यनर सहज मै व सहय आनंद साधल

५२५/१५ ५५५

अथ एतौ च नृपे न सुहृत्सीता  
जाके यतोक्तं य परां पञ्चाहमी  
तदा मे विरक्तः सौ य निर्लोभनीय  
नीतिमहात्मा अथैव न ही वृत्ति क  
उत्तमस्य न मिच्छेति

अथानन्द

अथ युक्तान्न केवली कनई  
नातामं नरक पुनं मेवां सहा  
यह मे रस सान मे प्रतनी वीर  
कमिनी ली और सं न्तिके  
नामही नाम सी अंतिहीन

धमरात्रिसहस्रदिवसदेउसं

आपको भव न होय

गहरो तला अस्त्री सुभोगनीसं

करै जैसे अनिला घा होय ते सौ

उज्ज

उज्जालों गइ



जयनाप विद्वकादापुत्ररुपगुव  
नीतयेआठनामहै

स्माधरु

रिगवै कुचनपैनरतारसुगंधलगावै  
वज्ररिअस्त्रावाथनरै। मुखवुवैनकरै।  
यहवद्वधाधिरूटपरिरंनणहै।  
नसौआपसमैवाथनरैछीतीसंछाती  
लगाया। तलैचलैनह  
रिरंनणहै।

हेऊअस्त्रापुरसललाटनेऊपोलमु  
पछुतीवाहमिलावैवहोतपीतिसौचु

॥ वस्त्र हर करि ॥ कैके सच्छतिर है  
चुवन करै पापरंग न एको जघन  
है ॥ ४ ॥ पति से जपै वैनै त्रसूहि के ॥ पा  
अस्त्री कुच लगावै सो नरतारति  
जघन को पकड़ी मर्दन करै सो विद्व  
म परि रंभण है ॥ ५ ॥ अथ म अस्त्री के  
जल लगावै जव अधीर होय तव  
जंघन सौ आपी जघन करै नरतार  
पग कहते ॥ ६ ॥ और कहत है कह  
अकर्म अथवा से जपै पति के साम्ह  
अस्त्री के रछाती सो लिपटै पति  
पाट गहै सो ऊनु जान सौ सब अप

रसपरदेऊनकै मिलै यह हारनार। परि  
रंन एहै। ७। अस्त्री पति को लिपटै पति  
सूधो वै गोरहै। जैसे वेलि वृत्त सो लिपट  
है। या तंति पाछै पति प्रीति सों कपोल॥  
अबुंवन करै। तो मंद मंद सी कारा नरै य  
ह कल्लरावेधत है। पहलये आठ तंति के  
परिरंन करि। पाछै चुंवन करै॥ ८॥ अब  
चुंवन भेद॥ अधर नाम होउने त्रदोऊ क  
पोल ललाट मुधु कुच मूल सी सदन गोर  
चुवन कह्यो है। पंडित जो काम सास्त्र मै  
पवीन है। जिनने परिरंन ए कै पाछै। श्री  
रदेऊ कांय मनमय मंदिर नानि मूल का  
न मै बंचला चेत जा को। सो काम। चुव  
न करै जथा जी गप और गोर चुंवन नह  
रह को क म स है अस्त्री चुंवन ने न पस



जोरसासा सुकन ५५५ ५५५ ५५५ ५५५  
सोमुखचूमेकं यत्तहि मितनामचुं  
नकहतह १ औरकहतह नाराव  
मुखसोमुखन गावफेरहोचचुं ११  
रह २ नरतारताको अधरातमत  
नकर रह ३ रत्तनामचुं वनह  
नरतारता नकहेताघननी अर  
न वाडीपकडे पीछाता फेरहाव  
ननकर त ३ अस्त्राकेनेनचोके  
तहि ताहि तर्पमासचुं वनकह  
उदपरति के समय कामदेवके  
सोयैद्वलचितलोय के नाराव  
रकोमुखचुं वनके वारवारज

सौय्यारवाणीबोलै॥ ताचुवनकरतिअत  
रोषचुवनकरतहै॥ ७ ॥ नरतारकेहोवहा  
थनकीआंगलीतानकेसंसपटमैलेप  
अस्त्रीआपकेहोवनतैचुवनकरैकह  
तहै॥ ५ ॥ औरकहतहैपहलनरतारप्या  
रीकेमुखकोआपके॥ आवनसौपकरैचु  
वनकरै॥ पाछेतैहैसहीअस्त्रीनरतार  
कोमुखचूमै॥ सोसंपटनामचुवनतैको  
ककलामचतुरहै॥ ६ ॥ अस्त्रीसाबनहैनी  
दमैयेकांततत्तानरयातिसौमुखचुवन  
करै॥ तबचेतनहोयतिहिस्तीतिनोअन  
मचुवनतहै॥ ७ ॥ अधरहोवहोउत  
कैकामनीजोहै॥ जोपतिकेहोवचूमैजी  
नकरिकेचूमै॥ कछकदंततगदचूमै  
नृत्यकरैसोचुवनचिसमोषनामहै॥ ८ ॥

यः नवीनरतिमैविरहनाहोय तव  
देसजायतवद्वयनासमैविरतमै  
श्रीकौमदहोयतवविरतमै अस्त्री  
मदहोयतवविरतिवैराग अस्त्री  
होयसोपहलेसातवी ७ कलामैल  
नलियोहै सोदेविलेजै इतनीस  
नमैतवदेणालुगाईकै सोनवकह  
है असेहोयजिनमैरखानहोय जिन  
मलनहोय अजलेहोय चीकलेहो  
हरयौलरगकेफटेअसेनहाहोय  
तणहोय कामसास्त्रमैअसेनव  
हिये अनघोरनकेदेकपोलकच

३  
गेवनपै परगटचिह्नहोय। ऐसेदेपतिते  
रोमबजेहोय। अस्त्रीकेअरकेंठमेसंपूर्ण  
नषदेयतहिछरितनषदानकहतहै। २  
ग्रीवाकेविषे कुचनपैमुखमेतषदेपतिन  
कोअर्द्धचंद्रकहतहै। ३ औरमुखपैनष  
देयतहिमंजुलकहतहै। ४ होयआंगुल  
केनषदेयवातीतआगलीकेनषदेयवात  
न। आगलीकेनषतिनकोअहीस्करे। म  
स्तगमैजंघनपैगुघदेसमैकुचनपैअथ  
वाकुचपैअंगुवांकोनषदेय। सोमपूरया  
दकहीये। ५ पांचूनषकुचपैगंडेसोसत  
तसंगपाहै। ६ तानरेषहोयपीठमेकचपै  
गुघस्थानमे। सोअथचाकमलकापूष  
७। ऐसेचिह्नहोयसोअनर्थबनामन  
पदानहै। ८ अथनषअस्त्रीकेसरीरमेदे

॥ अथ हरसुख विधि ॥

जाहां जाहां नय दान कहै ताहां  
लक्ष्य कावै औ घने वन

मे अस्त्री कौ कावत है तास मेलुगा  
हावाय सी सकारी भैर तहां अति सुख  
तहै १ दांत असे होय रंगलि  
कतवही तहोय समान वरो वर होय  
रहा होय छोटे छोटे होय  
होय असे दात प्रेष कहै है और छोटे  
डेनवान कवाहर नि कसे मलीनये  
दत है इन तै लगार्न राखी होय २

होवनमदतलगावै जासौ चिह्नमात्रही  
होय। सो गूटनामहै शकपोलनिपै धरौ क  
वै ताहि उचनय कहत है। पंडितः श्री  
नको विसेषना सब होत काववोन कद्यो  
क बूलनार होय रेया चिह्न अस्त्रा पुरस  
दोउ करै। ३। ललाट में दोउ दांत को चिह  
न करै। सो बिडुमाला कहवै। कपोलन  
पेछाता में गुदा में पेट पै दांतन के चिह्न नै  
बुद्ध के चिह्न होत है। मंडल के आका  
र गोल अस्त्रा के अंगन में वहोत मोन दित  
है। निरंतर और तीषे दांतन की पंगति थ्या  
१। के सरार में नरता करै। रोस करितिन  
के चिह्न धाव। समै पै समरन करावै। हर  
ते को उन को अस्परस होयवो। श्री सेदां  
लगहरे गडावै। सब अंगन पै पहल कहै।

तन्नाछेहे तिनवालवजी  
निसौजुगतिकरमंधीरापक  
तीवार १ बालनकुपकहि  
धीचयाछेचुवनकरै मुखकपोलसो  
महस्तक कहिये २ जोयेकहाथसों  
डिषीचैफिरिचुवनकरै ताहिरंग  
कहिये २ हाथकैवाललयेटीमदनमे  
आरतहाय कैयारीकोसेजपैदरे को  
ककलामेचतुर ताहिनुजंगक्लीक  
गहै ३ तासमेकामदेवपगटहोयहै  
औरतहैकेसधीचवातेतहांवजी  
नेसोंदोउचुवनआपसोंकरैनुजान

कौआपसमयकडिलेया। नान्तिकेसगए  
कहीहै। धया नान्तिवाहुरलीरतिकेवेभेद  
कहैहै। औरनेदवहोतहै। सोग्रंथकेवट  
त्राकेनयतैनकहैहै। विलासपुरसनकौत्र  
पहीतैजानेपरतहै। ६ इति श्री कौटिल्य  
धरग्रंथेवाद्यस्त्रीरतिपरंमणचुवनरण  
नोनामचतुर्दशीमकला १४॥ अथ सरत  
नेरकतना। अवकहतेहैजैसेआपमैव  
नबुद्धिहोतैसोकामीपुरसपहलैउपर  
तेकरै। अस्त्रीकोअंगसिथलहोयजा  
पतायाछै। अपनीअस्त्रीसोभोगकरै।  
कामदेवकोब्यालनाकारंगमै१ जोअ  
ग्रीदटहोया। तोहसिथलहोजातहै। तां  
नकेयसारवेते। औरसिथलहूयपाव  
मेटेसादटहोया। येलवाकेवयत२ अ



पुण्यायेतद्धतिनके  
अथउतानकअस्त्रीसूधासोवे  
उपावभरतारवकारियेलेय  
कुचगहेपाछेभोगकरैरतिकौंवहो  
वातकरुकरैहोसमपाहनामया-  
नकोकहेहो॥ जोसंभोगमैचतुरहो  
भाषामैयाहिमदनोदितकहतहै॥  
स्त्रीसूधासोवेताके  
वेदोऊजाधपके  
गरपाछेभोगकरैसेअमरनामअ  
नहै॥ औररुहैतहैवहाजातिलुगा  
सोवेतहांभरतारवनिहैअस्त्रीको

वतो धरती मैरा वै हू सरार पाव उवाँ  
नर आप के से उहा तन सौ आप नै मा  
प्र धरती मै लुगार्स को रावि नोग करै  
गति त्रिविक्रम आस न होत है श आ  
इत है बां हानां तिलुगार्स सुधी सो वै फे  
थन सौ लुगार्स हो आप की जांघ क  
पाव ऊंचे कर लेता पाछे नग के साम  
विकुच पक्षि दो ऊहा थन सौ या भा  
के ल करै सो यहै आसन व्योम पदै है  
और अस्त्री की जांघ दो ऊहा थन सौ ले  
धरती मै सो सेज पै सुधी सुवाय नौ गल  
पह काम चक्र नाम आसन है ५ जय  
नुगार्स सुधी सो वै दो पाव पुरस की छ  
सोल गाव नर तार ता हा आलि गन  
रि दो लि के सो मताम आसन है ५

त आतंरुकर है जंजतनामयाको  
नोर अस्त्री की जांघ दोऊ अस्त्री की छा  
पै करै कंधा दोउ पकड़ सुवना चै का  
नया कलहोर या जांति स नोगि करै  
विवरु न स है ० पुरस लुगार्ज की  
क जांघ ताही के कंधा पाधरै दूसरी  
नयन दो धरती मै राखि वडे जौर सो नो  
करै सो वैरा विहात आसन है ० श्री  
अस्त्री आय घोड़ा पड़े जांघ उंची राखै न  
गार छाती सो लिपट नोग करै संभोग  
कनाम है ये कऊ चोटे न सारै धाम  
करै सो हू मरो न के न

अस्त्रीकलौतलयसंवे तत्तः नरता  
कपावैरुगय आपकीछातीसौलगा  
हसरोसेजपैरहे काभो... के... करे  
हदीणीकानामअसनेह यहजवान  
गाईसौकरिये १ बारबारअस्त्री...  
वैतहापुरससंनोगकरे कर... हातुगा  
इतसोहापुरस... पटकर... तिकर सोसं  
पुटतामअसनेह २... अस्त्रीकरे...  
हांसोंपदेउपावनकर... कां...  
जेलगांव नरतारवैविकनोगकर सो  
कुरकटनामअसनेह ४... अस्त्री...  
मुवायेसोतहे ३ अस्त्री... वै...  
अस्त्री... तिकर लंगाईपासक... बार  
यंदेउ पा... उपावसेउ... कुलेनी  
लो...

उल्लंघनाजिये गैरे या छे पुरस भोग क  
पहरति आसन है ३ और जैसे अस्त्री  
नैव कहती है से पुरसे आपन की जांघ  
मे होय हाथि काटि आपकी नाडी मे  
रे फेरि से भोग करै सो फणि पास आस  
है ४ जांघ कहो शानि पर है हो उन की  
स्त्री की जांघ को ५ आपकी कहो शानि पर  
रतार लेय या छे आप के कंठ मे आप  
भुज्जु कर रति करै ता को संजय  
आसन है ६ और कहत है दोउ सग  
दवै लख सौ भुज्जु माहो दोउ बाहन  
हो निहाने जाग्य करे ऊपर से लावे

जातिनोगकरैकरैमै

स्वैकृपावञ्चैरहै। तोपरिवर्त-

य। ७। लुगार्इ देख पावजोडिबुंचवैवै

तार। ब्रह्महोयनोगकरै। जुमपद

नहोतहै। ८। लुगार्इ वैठिकै पुरसक

रियकडै। ९।

वारवारहलावै। वारवारह

चुवनकरै। यहमर्कटआसनहै॥ १०॥

भटतजैय। ११। अस्त्रीपुरसदेखउनेनोगकरै

पुरसअस्त्रीकोदेखजाधआपकीकुहै

णीनपैलेयदेखहाथनसोअनायकडै

रतिकरैकरपटआसनहै॥ १२॥ अस्त्री

कोयेकपावकहोणीपैलेय॥ येकपावउ

रैयाजातिरतिरैकरै। ग्रीवापकडक

॥ सोहरिनि

नति नो गवरे सोरति कारति आसन  
 मलु माई धरती मै रै के नीच को  
 गशु कति दूर सके आगे रहै  
 नर नार कर्म रिपवही कै लु  
 की नो गवरे सोरति आसन है  
 नर नार कर्म रिपवही कै लु  
 मलु माई धरती मै रै के नीच को  
 गशु कति दूर सके आगे रहै  
 नर नार कर्म रिपवही कै लु  
 की नो गवरे सोरति आसन है

होर्षपावशब्दोंमें टले न...  
ले हलैपावनको हलांन वुगलानार्  
जुजोविपरीतको नेह्लै २ और कह  
हीनांतिनरतारसंधोसोवै अस्तीउ  
वेकामदेवकैवेगतें वंचलहोय शुक  
वसंऊवेरधरैपाछे आपनेहाथनगमल  
गराधे फेरिकरिआपकीहलवचयल  
तासौउत्कलकाजामआसनहै ३ और  
कहतहै विपरतरतकेविलमेधनुगर्  
वरितकरै सीकारीनरैहो नरतारकोअ  
ग्रहास्पमंदमंरकरै क...सो कहतहै  
रेवस्पहोय तुममैनेजानेसोय औरव  
नतानेवनकीवचनकीअंजनकश्चि  
कलिकं ४ असेकेलिविपरीतकर  
इववावे नमैसुंदरव



३० मुष आरनासेकादृऊ  
सर्व आर होय सोहि कृत कहिये १०  
जैसे मेह गाजे गं नार ऐसे सब द्रव्य  
रे जा को नाम तनित है ३ और जैसे  
कै माहि मेह कायूं द्रव्य है तिन को स  
यता है कारी लुगार् हर द्रव्य तै नै  
कृत कहिये ये पात्रों से साकार  
ये कृत लवना को तो जो यल को  
हल को लील कृत को हल को से सब द्रव्य  
निजाय द्रव्य को है विष्णो गमे  
पतिराति पुरुष को भक्ति यत्नाति च

विह्वलदेवैः। सो विह्वलकहत  
तञ्जन। औरह अस्त्रा के आम  
वहनपतिके अंगमै देवैः औरन  
रेला लनेत्र देवैः। तव चतुराई सो  
मता के वचन कह कै वात जना  
गुपतराये। सो घडिता कहिये।  
सज्जा जो अस्त्रा सुंदर भवन सुधा  
के आगम के वास्ते सुंदर सेज स  
प्रापवस्त्रा गहना अंगरत्न काज  
सुगंध और रत्न का समा करे फे  
र देवैः चक्र तसीर हे जव आहत  
वही हर्ष करे। आगे पतिके ज  
और नायक आवे नही रोया स  
जा कहिये। अथ कलहंतरिता  
मतो पति पंडा करे। काहें कल



